27

दाऊद पर अंतिम शब्द

2 शमूएल 21-24; 1 राजा 1; 2; 1 इतिहास 20-29

एक प्रसिद्ध लेखक ने दाऊद के विषय में कहा है, ''हम कह सकते हैं कि मानवीय इतिहास पर इतना आत्मिक असर डालने वाले और आधा दर्जन से अधिक लोग नहीं होंगे।''[1] दाऊद जैसे व्यक्ति के जीवन को इकट्ठा कैसे किया जा सकता है?

2 शमूएल के लेखक ने विशालदर्शी ढंग अपनाया है। अबशालोम के विद्रोह के कुचले जाने के बाद, 2 शमूएल के अंतिम चार अध्याय यह संकेत दिए बिना कि वे कब हुए दाऊद के जीवन के अच्छे और बुरे दिनों के दृश्यों की महक हैं । पहला राजा में एक दशक बाद कहानी को फिर से जीवित किया जाता है जब मृत्युशैय्या पर लेटा दाऊद, सुलैमान को राज्य सौंपने की तैयारी में था।

दूसरी ओर 1 इतिहास के लेखक ने ज़ोर देने का ढंग अपनाया है। वह हमें बताता है कि दाऊद ने अपने जीवन के अंतिम दस वर्ष सुलैमान के लिए सब कुछ तैयार करने, राज्य को संगठित करने और (सबसे बढ़कर) मन्दिर की तैयारी के लिए दिए।

इन दो ढंगों पर विचार करते हुए, मुझे दो टैलिविज़न नेटवर्कों द्वारा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर प्रसारण ध्यान में आया। इनमें से एक उस व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण और छोटी-छोटी बातों, अर्थात उसकी सामर्थ और उसकी निर्बलता को याद कराते हुए विशेष कार्यक्रम दिखाएगा। दूसरा उस व्यक्ति के जीवन तथा उसकी उपलब्धियों पर ध्यान दिलाता है। दूसरा शमूएल और 1 राजा पहले नेटवर्क की तरह हैं; 1 इतिहास दूसरे नेटवर्क की तरह।

अपने दिमाग में इन विशेष टीवी कार्यक्रमों को चित्रित करते हुए, मुझे एक और विचार आया: इनमें से कोई भी उस व्यक्ति के जीवन की बातें दिखाकर ही बस नहीं करेगा। दोनों एक ऐसा फीचर दिखाएंगे जो मुझे बहुत चिड़ाता है: उस फीचर में यह बताने के लिए कि वह व्यक्ति सफल था या असफल और इतिहास में उसका क्या स्थान होगा, ''विशेषज्ञों'' द्वारा समीक्षा की जाएगी। इस विचार पर पहले तो मैंने त्योरी चढ़ाई; फिर दांत निपोड़े। इस अध्ययन में, मैंने उन ''विशेषज्ञों'' की भूमिका निभाई। समय समय पर, दाऊद के कार्यों से मुझे बहुत कष्ट हुआ। मुझे लगा जैसे मैं पुकार रहा हूं, ''दाऊद, तूने ऐसा क्यों कर दिया? मैं जानता हूं कि तू परमेश्वर से और उसके वचन से प्रेम करता है! फिर भी तू ने ऐसा क्यों किया?'' शायद आपने भी ऐसा ही किया है।

जितना मैं दाऊद के जीवन की नाटकीय प्रकृति पर विचार करता था उतना ही मुझे

टैलिविज़न के विशेष कार्यक्रम के ढंग का इस्तेमाल करके उसके जीवन को ''विशेषज्ञों'' के निष्कर्ष के साथ संक्षेप में बताना उपयुज़्त लगा। आप अपनी कल्पना को थोड़ा विस्तार दे सकते हैं, परन्तु मेरे साथ बने रहें।

दाऊद पर मनुष्य की अंतिम बात

ढेर सारे विज्ञापनों के बाद स्क्रीन पर ये शज़्द दिखाई देते हैं: ''दाऊद पर अंतिम शज़्द: *TFT* का विशेष कार्यक्रम।'' शीर्षक धुंधला पड़ता है और स्क्रीन पर वाचक का चेहरा सामने आता है। ''देश आज के महानतम लीडर, इस्राएल के राजा, दाऊद के निधन पर शोक की लहर में डूबा है। दाऊद राजा के जीवन की झलकियां दिखाने की इस विशेष श्रद्धांजलि में हम आपको अपने साथ बने रहने का निमन्त्रण देते हैं। जाने माने कमेंटेटर, समीक्षक ईमा और समीक्षक ऊरा हमारे साथ में हैं।''

सम्राट (2 शमू. 21:1-14)

जवान दाऊद के उदास चेहरे को निकट से दिखाते हुए वाचक की आवाज सुनाई देती है। ''आप में से कइयों को याद होगा कि साढ़े सात साल के गृह तथा सैनिक युद्ध के पश्चात दाऊद का समस्त इस्राएल पर राजा अभिषेक किया गया था। सैंतीस वर्ष की आयु में अन्ततः जब वह सिंहासन पर बैठे, तो इस्राएल की स्थिति डांवांडोल थी। दाऊद को भीतरी शत्रुओं का ही नहीं, शाऊल के विनाशकारी शासन का प्रभाव भी झेलना पड़ा था।''

कैमरा पीछे घूमता है। दाऊद को उस तज़्बू के सामने दिखाया जाता है, जहां वाचा का संदूक रखा था।[2] वह आकाश की ओर देखते हुए कह रहा है: ''तीन वर्ष, हे परमेश्वर, अब तो बारिश हुए तीन वर्ष का अरसा हो गया है! हमारे पशु मर रहे हैं। हमारे बच्चे भूख से तड़प रहे हैं। ज़्यों, हे प्रभु, ऐसा ज़्यों हो रहा है?'' ऊपर से एक अवाज आती है: ''यह शाऊल और उसके खूनी घराने के कारण हुआ, ज़्योंकि उसने गिबोनियों को मरवा डाला था'' (21:1)।[3]

दाऊद को यरूशलेम की ओर जाता दिखाते हुए, वाचक व्याज़्या करता है: ''जिस समय यहोशू देश में आया था, तो गिबोनियों ने पवित्र प्रतिज्ञा करने के लिए उससे धोखा किया था ताकि वह उन्हें नाश न करे। जब यहोशू को पता चला कि उसके साथ छल हुआ है, तो उसने गिबोनियों को सदा के लिए निवास स्थान के लिए लकड़ी और पानी लाने के लिए लेवियों के सेवक ठहरा दिया था (यहोशू 9)। जब शाऊल राजा बना, तो गिबोनी लोगों को देश में यहोशू द्वारा ठहराए कार्य शांतिपूर्वक करते हुए तीन सौ से अधिक वर्ष हो गए थे। परन्तु शाऊल ने उन्हें मिटा डालने का फैसला किया, और बहुत हद तक वह सफल भी हो गया।[4] देरी से होने वाला परिणाम दाऊद के शासन के समय मिला, जब एक अकाल पड़ा जिस से देश शापित हुआ।''

दाऊद को सिंहासन पर दिखाकर, दृश्य बदल जाता है। उसके सामने कई लोग हैं। सिंहासन के एक ओर सोने और चांदी के सिज़्कों से भरी एक तिजोरी है। उन लोगों को गिबोनी कहा जाता है। दाऊद बोलता है: ''मैं तुज़्हारे लिए ज़्या करूं?'' वह तिजोरी की ओर

संकेत करता है। ''और ज़्या करके ऐसा प्रायश्चित करूं, कि तुम यहोवा के निज भाग को आशीर्वाद दे सको?'' (21:3)।

वे झुकते हुए जवाब देते हैं, ''हमारे और शाऊल व उसके घराने के मध्य रुपये पैसे का कुछ झगड़ा नहीं; और न हमारा काम है कि किसी इस्राएली को मार डालें।'' ''मार डालें''? हम चकित होते हैं। वे खून का बदला खून चाहते हैं। दाऊद महल की खिड़की से बाहर सूखे खेतों और भूमि में पड़ी दरारों को देखता है और अंत में कहता है, ''जो कुछ तुम कहो, वही मैं तुम्हारे लिए करूंगा'' (21:4)।

आदमी जवाब देने को तैयार हैं: ''उस [शाऊल] के वंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएं, और हम उन्हें यहोवा के लिए ... फांसी देंगे।'' दाऊद के चेहरे पर राहत और उदासी दोनों दिखाई देते हैं। हम उसके मन को पढ़ सकते हैं: ''सैकड़ों के बदले में केवल सात। ... पर मैं इन सात लोगों की मृत्यु को गलत कैसे ठहरा सकता हूं?'' आखिर राजा हां में सिर हिलाते हुए कहता है, ''मैं उनको सौंप दूंगा'' (21:6)।

आदमी चले जाते हैं। दाऊद अपने सलाहकारों को बुलाता है,[5] और उन्हें सात जनों को चुनने का काम सौंपता है। वे शाऊल के वंश के बचे हुए आदमियों की सूची बनाने लगते हैं। मपीबोशेत का नाम आने पर, दाऊद सिर हिलाता है। वह कहता है, ''मपीबोशेत का नाम काट दो, मैंने उसके पिता से बहुत पहले एक प्रतिज्ञा की थी।''[6] बहुत सज़्भावनाएं नहीं हैं; शाऊल का वंश लगभग समाप्त हो चुका है।[7] जीवित बचे कुछ लोगों में शाऊल के दो लड़के तो रखेल रिस्पा के हैं,[8] और पांच लड़के शाऊल की सबसे बड़ी बेटी मेरब के।[9]

दृश्य बदल जाता है, एक ऊंची पहाड़ी पर सात खज़्भों पर सात लाशों पर ढलते सूरज की रोशनी पड़ रही है। एक महिला शोक के वस्त्र पहिने, रोते हुए, रज़वाली कर रही है। जब हम देखते हैं, तो दृश्य में थोड़ा-सा बदलाव समय का संकेत देता है। रात दिन, वह स्त्री उन लाशों के पास ठहरती, शिकारी पक्षियों को उड़ाती और उन लाशों की दावत खाने के लिए आने वाले पशुओं को मारकर भगाती है।[10]

दृश्य बदलकर राजा के दरबार में चला जाता है। दाऊद के पास एक दूत आता है। वह कहता है, ''रिस्पा अभी भी वहीं है और उन लाशों की रखवाली कर रही है।'' दाऊद उन लाशों को लाकर शाऊल और योनातन की हड्डियों के साथ,[11] शाऊल के पिता कीश की कब्र में गाड़ने की आज्ञा देता है।

दृश्य बदलकर एक विशाल कब्र के बाहर चला जाता है। लोगों की एक भीड़ रो रही है। दाऊद अकेला खड़ा है। वह शांत है, उसका सिर झुका हुआ है, और वह गहरी सोच में डूबा है। आसमान धुंधला हो जाता है, बादल इकट्ठे होते हैं, और बारिश शुरू हो जाती है। अधिकतर लोग इधर-उधर चले जाते हैं। कैमरा आकाश की ओर उठे दाऊद के चेहरे पर पड़ता है।

दाऊद का चेहरा स्क्रीन से ओझल होता है और दो वाचक सामने आते हैं। स्क्रीन पर नीचे लिखे शज़्दों से एक का परिचय समीक्षक ईमा के रूप में होता है, जो लज़्बा, पतला और गुस्सैल चेहरे वाला है। दूसरा समीक्षक ऊरा है जो छोटे कद का, हंसमुख व्यज़्ति है।

ईमा गुर्राता है, ''यही वह बात है जो मुझे दाऊद की ओर आकर्षित करती है! लोग ऐसे करते हैं जैसे वह बहुत महान है देखो, वह निर्दोष लोगों की हत्या करने के लिए सहमत हो रहा है! कितनी गलत बात है!''

ऊरा त्योरी चढ़ाता है और कहता है, ''मैं भी दाऊद के निर्णय से सहमत नहीं हूं, परन्तु शायद हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। जो कुछ उसने किया वह साफ़ तौर पर परमेश्वर को ज़ाया, सो हो सकता है कि कोई ऐसी बात हो जिसका हमें पता नहीं है। हो सकता है कि यह परमेश्वर द्वारा शाऊल के घराने को ठुकराए जाने का एक भाग हो। हो सकता है कि मरने वाले निर्दोष न हों। याद करो कि परमेश्वर ने कहा था, 'यह शाऊल *और उसके खूनी घराने* के कारण हुआ''' (21:1)।[13]

ईमा फुफकारता है। ''केवल अनुमान!''

ऊरा अपनी ठोड़ी पर खुजलाता है। ''हो सकता है, पर मैं दाऊद को संदेह का लाभ देने को तैयार हूं। अंगूठा ऊपर।''

तालिका के बोर्ड पर स्वीकृति के लिए अंगूठा ऊपर और अस्वीकृति के लिए अंगूठा नीचे दिखाया जाता है।

सैनिक (2 शमू. 21:15-22; 1 इति. 20:4-8)[13]

वाचक स्क्रीन पर आता है। ''दाऊद एक सैनिक विशेषज्ञ था। वह पीछे रहकर सैकड़ों मील से कुर्सी पर बैठकर निर्णय लेने वाला सेनापति नहीं था। वह अपनी सेना के साथ था! इस्राएल के सदाबहार शत्रु, पलिश्तियों के साथ यादगारी युद्धों में से एक का दृश्य देखें। ... जिसमें गत वासी दानव हैं।'' स्क्रीन पर संक्षेप में लिखा दिखाई देता है: ''अगले दृश्यों में हिंसा तथा मृत्यु की तस्वीरें हैं। दर्शकों को दिल थामने की सलाह दी जाती है।''

हमें युद्ध के मैदान में पहुंचा दिया गया है। पहले तो हम पसीने से ज़री देहें, धंसे हुए हथियार, खून की नदी में डूबी लाशें,तड़पते हुए लोगों की चीखें घारा जाते हैं। कुछ देर बाद हमें लड़ाके दिखाई देने लगते हैं: दाऊद और उसके आदमी पलिश्तियों से लड़ रहे हैं। पलिश्तियों में दानव हैं; वे अपने से छोटे इस्राएलियों पर लपक पड़े हैं। दाऊद और उसके आदमी खूंखार लग रहे हैं।

लड़ाई बढ़ने पर, दाऊद धीमा और धीमा होता जाता है। उसकी आंखें चमकने लगती हैं और उसे तलवार नहीं उठ पा रही है। एक दानव दाऊद की हालत देखता है, और अपनी विशालकाय तलवार घुमाते हुए उसकी ओर बढ़ता है। अंतिम क्षण में दाऊद का एक सिपाही राजा और उस दानव के बीच में आ जाता है, और शत्रु के पेट में अपनी तलवार घुसेड़ देता है। उस दानव के भूमि पर गिरने पर हमारी सांस वापस आती है।[15]

कैमरा स्टूडियो में वाचकों पर पड़ता है। ऊरा ईमा की ओर देखता है। ''आपका इसके बारे में ज्या विचार है ?''

ईमा बुदबुदाता है, ''मेरे हिसाब से यह बहुत ही हिंसक है, परन्तु मुझे लगता है कि देश में शांति लाने के लिए ऐसा होना आवश्यक था। मेरे अनुमान से यह अंगूठा ऊपर होगा।''

गायक (2 शमू. 22:1-51)[15]

दृश्य बदलकर राजा के सिंहासन के कमरे में चला जाता है। राजा का वस्त्र पहने दाऊद सिंहासन पर बैठा है, उसके हाथ में वीणा है। वाचक बोलता है: ''हम में से अधिकतर लोग दाऊद के जीवन से उतना प्रभावित नहीं हुए होंगे, जितना उसके गीतों से, हमारी तरह दाऊद के जीवन में भी उदासी और निराशा के पल आए। हम में से अधिकतर के विपरीत दाऊद को उन भावनाओं को चर्मपत्र पर डालकर उन्हें परमेश्वर के साथ जोड़ने का दान मिला था। आइए सुनें कि अज़ी-अभी जीत प्राप्त करके दाऊद परमेश्वर की महिमा कैसे करता है।''

उसकी आंखें बंद हैं, वह मधुर आवाज में गाने लगता है।

> यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़,
> मेरा छुड़ानेवाला, मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर है,
> जिसका मैं शरणागत हूं, मेरी ढाल,
> मेरा बचाने वाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़,
> और मेरा शरणास्थान है, ...
> मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा,
> और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा (22:2-4)।

कैमरा दाऊद पर पड़ता है। एक क्षण के लिए उसका चेहरा तनाव में आ जाता है।

> मैंने अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें सत्यानाश कर दिया,
> और जब तक उनका अन्त न किया तब तक न लौटा।
>
> तू ने मुझे ... अन्य जातियों का प्रधान होने के लिए मेरी रक्षा की;
> जिन लोगों को मैं न जानता था वे भी मेरे आधीन हो जाएंगे
> (22:38, 44)।

गीत समाप्त होने के साथ उसका चेहरा नरम पड़ जाता है:

> इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति जाति के साज़्हने तेरा धन्यवाद करूंगा,
> और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।
> वह अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है,
> वह अपने अभिषिज़्त दाऊद, और उसके वंश पर
> युगानुयुग करुणा करता रहेगा (22:50, 51)।

दृश्य वाचकों की ओर मुड़ने पर, ऊरा पहले बोलता है: ''मैं तो कहूंगा कि यह दृश्य उसकी सैनिक विजयों के बाद का नहीं, बल्कि बतशेबा से उसके पाप से पहले का है।[16] यह

यहोवा के साथ की गई उसकी वाचा से पहले का भी हो सकता है (2 शमूएल 7)।गीत जब भी लिखा गया हो,मुझ पर इसका असर हुआ है!''

ईमा कहता है, ''अपने शत्रुओं की हार पर उसकी बुरी दृष्टि से मुझ पर कोई असर नहीं हुआ।''

''फिर भी यह एक बहुत अच्छा भजन था!''

''सही बात है। ...वाकई अच्छा भजन था। ... हिचकिचाते हुए अंगूठा ऊपर।''

अपने पक्ष में दो बार अंगूठा ऊपर होने पर ऊरा का चेहरा खिल जाता है।

ज्ञानी (2 शमू 23:8-39)[17]

कई दांतों वाला एक आदमी दमिश्की जूते बेचते हुए स्क्रीन पर आता है। हमारे ड्रिंक लेकर वापस आने पर वाचक कह रहा होता है, ''अब हम दाऊद के शासन के अंतिम दस वर्षों की ओर आगे बढ़ते हैं।'' दृश्य बदलकर फिर दाऊद के सिंहासन के कमरे में चला जाता है। दाऊद के लाल बाल सफेद हो चुके हैं। शाही वस्त्र राजा की कमर से कुछ तंग हो गया है। वाचक आगे कहता है: ''दाऊद ने अपने अंतिम दिनों में एक बात की कि उसने विशेष लोगों के लिए अपनी प्रशंसा व्यज़्त की। उन सामान्य लोगों में वे लोग भी थे जो उसके साथ तब मिले थे जब वह शाऊल से भगौड़ा था।''

एक तस्वीर दाऊद के दरबार से ली जाती है। दाऊद दरबार के सचिव को बुलाता है, जो चर्मपत्र, कलम और सियाही निकालता है। दाऊद ने उसे तीन शूरवीरों, दोदै का पुत्र एलीआज़र, आगे नामक एक पहाड़ी का पुत्र शज़्मा, जिसने उसे बड़ी विजयें दिलाई थी, और योशेज़्यश्शेबेत जिसने एक ही समय में आठ सौ पुरुष मार डाले थे, के नाम लिखाता है।[18]

दाऊद रुकता है और फिर लिखने वाले को निर्देश देता है, ''यह अवश्य लिखना, 'और *यहोवा* ने बड़ी विजय दिलाई''' (23:12)

दाऊद उन तीन शूरवीरों की कहानी बताता है, जो उसके लिए बैतलहम से पानी लाए थे। उसकी आंखें उनके साहस और वफादारी को याद करके धुंधली होने लगती हैं।

दाऊद अगले तीस आदमियों के नाम बताता है। पहला योआब का भाई अबीशै है, जो तीस पर सरदार था। उसके बाद बनायाह है, जो दाऊद के निजी रक्षक का कप्तान बना। शेष के नाम बताते, एक-एक के नाम बोलते हुए, उनके अतीत को याद करते हुए दाऊद रुक जाता है: ''योआब का भाई असाहेल[19] ... एल्हानान ... शज़्मा ... एलीका ...।'' कुछ देर बाद दाऊद नाम लिखाना बंद करता है। वह अंतिम नाम बोलता है: ''हिज्री ऊरिय्याह।''[20] कैमरा एक पल के लिए दाऊद के चेहरे पर पड़ता है, जो पीड़ा से भरा हुआ है। स्क्रीन धुंधली पड़ती है।

स्टूडियो में ईमा बड़बड़ा रहा है।''और करो हिंसा की चापलूसी!''

ऊरा आग्रह करता है, ''पर यह आवश्यक था। महत्वपूर्ण बात यह है कि दाऊद ने अपने आदमियों की सराहना की! इससे उसकी बुद्धि तथा स्वभाव का पता चलता है।''

हिचकिचाते हुए ईमा मान लेता है। ''हो सकता है।''

''ईमा का सिर हिलाना उसकी हां ही लगता है।''

बोर्ड पर दो अंगूठे ऊपर को जुड़ जाते हैं।

पापी (2 शमू. 24:1-25; 1 इति. 21:1-22:1; 27:23, 24)[21]

वाचक सक्रीन पर आता है: ''दाऊद के अंतिम दिन विजय तथा त्रासदी का मिश्रण थे। जिस समय को कोई भूल नहीं सकता, वह राजा द्वारा आरज़्भ की गई कुज़्यात जनगणना थी।''

हम फिर से सिंहासन के कमरे को देख रहे हैं। राजा के सामने एक खूंखार बूढ़ा[22] खड़ा है और दूसरे लोग सेना की पोशाक में उसके सामने हैं। दाऊद के बाल काफी सफेद हो चुके हैं। परन्तु उसकी आवाज अभी भी रौबदार है: ''... तू दान से बेर्शेबा तक रहने वाले सब इस्राएली गोत्रों में इधर-उधर घूम और तुम लोग प्रजा की गिनती लो, ताकि मैं जान लूं कि प्रजा [युद्ध की उम्र वाले लोगों (देखें 2 शमूएल 24:9)] की कितनी गिनती है'' (2 शमूएल 24:2)।

दृश्य बदल जाता है। दाऊद अपने पलंग पर बैठा, ऊंचे स्वर से एक पत्री पढ़ रहा है। ''हं ...। इस्राएल में 800,000 योद्धा हैं जो तलवार चलाते हैं और यहूदा में 500,000।''[23] वह अपने बिस्तर के पास जल रही बज़ी बुझा देता है और लेट जाता है। वह इधर-उधर करवट लेता है। अंत में, कुछ बोलता है, ''... यह काम जो मैंने किया वह महापाप है। ... मुझसे बड़ी मूर्ज़ता हुई है'' (24:10)।[24]

अगली सुबह हो गई है। दाऊद अपने बिस्तर के किनारे पर बैठा है, जब एक आदमी उसके शयनकक्ष में प्रवेश करता है। दाऊद उसे देखकर हैरान नहीं होता। आदमी बोलता है:

> यहोवा यों कहता है, कि जिसको तू चाहे उसे चुन ले: या तो तीन वर्ष का काल पड़े;[25] या तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे; वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात मरी देश में पैले और यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारों और विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं अपने भेजनेवाले को ज़्या उज़र दूं (1 इतिहास 21:11, 12)।

दाऊद कमरे में परेशानी की हालत में इधर-उधर घूमता है। अंत में वह बोलता है, ''मैं बड़े संकट में हूं; हम यहोवा के हाथ में पड़ें, ज़्योंकि उसकी दया बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मैं न पड़ूंगा'' (24:14)।

स्क्रीन पर शज़्द संक्षेप में दिखाए जाते हैं: ''आगे के दृश्यों के लिए माता-पिता के साथ होने की सलाह दी जाती है।'' हमें एक छोटे से गांव की मुज़्य सड़क पर ले जाया जाता है। बाज़ार में लोगों को जल्दी है। दुकानदार गुजरने वालों को आवाज दे रहे हैं। स्त्रियां बरतन देखती हैं और एक-दूसरे से मिलती हैं। बच्चे अपनी माताओं के पास ज़ेल रहे हैं।

अचानक एक गरजता हुआ, घना बादल आकाश में दिखाई देता है। ऊपर देखते हुए

लोगों के चेहरों पर भय देखा जा सकता है। नगर पर बादल छाने पर लोग अवाक होकर गिर पड़ते हैं: एक दुकानदार, एक आदमी अपने परिवार के साथ चल रहा है, एक आदमी गली में से भाग रहा है। स्त्रियां गिरे हुए आदमी की तरफ भागती हैं, झुककर उसे देखती हैं। कैमरा उस आदमी के चेहरे पर पड़ता है, जो गिर गया था। उसके चेहरे पर आतंक छाया हुआ है। गली में चीख-पुकार होने लगती है।

हमें एक दूसरे गांव में ले जाया जाता है, जहां वैसा ही दृश्य है ... फिर दूसरे गांव में ... फिर किसी और गांव में ...। हम कांपते हुए अपनी आंखें बंद कर लेते हैं। हमें हैरानी होती है कि हमारी आंखें भीग गई हैं। वाचक को हम यह कहते सुनते हैं, ''मरी पलिश्तीन के उज़र से होकर तेजी से दक्षिण की ओर फैल गई।'' हम फिर स्क्रीन पर देखते हैं। एक नज़्शे द्वारा मरी के आगे बढ़ने को दिखाया जाता है। वाचक कहता है: ''नगर में मृत्यु के पहुंचने में देर नहीं लगेगी।'' एक तीर से यरूशलेम की ओर संकेत किया जाता है। हमें यरूशलेम नगर में ले जाया जाता है।

दाऊद और कई बुजुर्ग, टाट पहने, सिर पर राख डाले, तज़्बू के सामने झुके हुए हैं, जिसमें संदूक था। एक दूत भागकर राजा को बताता है, ''बादल आने ही वाला है!'' दाऊद उज़र की ओर देखता है। उसकी आंखें ज़ुली रह जाती हैं। वह कुरूप, घना बादल उज़री आकाश को घेर लेता है। धुंधले भंवर में एक रूप आकार लेता है: ''यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिए हुए आकाश के बीच खड़ा है'' (1 इतिहास 21:16)! दाऊद मुंह के बल गिरकर चिल्लाता है, ''जिसने प्रजा की गिनती लेने की आज्ञा दी थी, ... हां, जिस ने पाप किया और बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूं। परन्तु ... हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो, परन्तु तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो, कि वे मारे जाएं'' (1 इतिहास 21:17)।

वही आदमी जो पहले परमेश्वर का दूत बनकर आया था, सामने आता है। वह कहता है, ''जाकर अरौना यबूसी के खलिहान[26] में यहोवा की एक वेदी बनवा'' (2 शमूएल 24:18)[27]। एक तीर से उस स्थिति की ओर संकेत करते हुए, स्क्रीन पर यरूशलेम का नज़्शा दिखाया जाता है। वाचक समझाता है: ''खलिहान नगर की दीवारों के उज़र में ही था। मिनटों में हजारों लोग मारे जाने थे। राजा जल्दी से उस क्षेत्र में चला गया।''

दृश्य एक चौरस टीले में बदल जाता है, जहां धूल और भूसी से भरा एक बूढ़ा व्यज़्ति, चार जवानों की सहायता से गेहूं निकाल रहा है (1 इतिहास 21:20)। वह असमय बादलों को देखकर अपने बैलों से जल्दी-जल्दी काम करने को प्रेरित करता है।

दाऊद और टाट पहने हुए उसके साथी दृश्य में आते हैं। गेहूं पीटने वाला व्यज़्ति भागकर राजा से मिलने आता है, उसके सामने झुकते हुए पूछता है, ''मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास ज़्यों पधारा है?'' (2 शमूएल 24:21क)। दाऊद जवाब देता है, ''तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूं, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊं''; ''उसका पूरा दाम लेकर उसे मुझको दे, कि यह विपज़ि प्रजा पर से दूर की जाए'' (2 शमूएल 24:21ख; 1 इतिहास 21:22)।

वह व्यक्ति सिर उठाकर देखता है कि स्वर्गदूत तलवार लिए उनकेऊपर घूम रहा है। (1 इतिहास 21:20) थरथराते हुए, वह कहता है, ''मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए; देख, ... ये सब अरौना ने राजा को दे दिया'' (2 शमूएल 24:22, 23)। दाऊद सिर हिला देता है। ''ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत की होमबलि नहीं चढ़ाने का'' (2 शमूएल 24:24)। सौदा हो जाता है, दाम चुका दिया जाता है।[28]

दृश्य बदल जाता है। दाऊद मिट्टी और पत्थरों से बनी एक वेदी के सामने झुका हुआ है। वेदी पर आग की लपटों में, एक बैल की राख है। अचानक, आकाश से आग गिरती है और उस बलिदान को उठा लेती है।[29] दाऊद ऊपर देखता है, स्वर्गदूत अपनी तलवार ज़्यान में रख लेता है और ओझल हो जाता है (1 इतिहास 21:27,28क)। बादल छंटने लगते हैं, और धूप चमकने लगती है। हमें वाचक की आवाज सुनाई देती है: ''इस प्रकार बड़ी विपज़ि का अंत हो गया, परन्तु 70,000 लोग मारे गए! यह इस्राएल के लंबे इतिहास में सबसे बड़ी विपज़ि थी!''

कैमरा हमें स्टूडियो में वापस ले आता है। गंभीर ऊरा बोल रहा है। ''साफ-साफ कहें तो इस कहानी में बहुत सी पहेलियां हैं। यहां तक कि व्यवस्था को सिखाने वाले भी इस पर सहमत नहीं हैं कि दाऊद ने गिनती करनी ज़्यों चाही और यह पाप ज़्यों था। कुछ लोगों का विचार है कि दाऊद के मन में कर लगाने का ... या सेना में बलपूर्वक भरती करने का ... या अपने निर्माण कार्यों में बेगार कराने का विचार था।''[30]

ईमा उबासी लेता है। ''कौन परवाह करता है? दाऊद केपाप करने से ही 70,000 लोग मारे गए!''

ऊरा स्तज़्ध लगता है। ''परन्तु परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया। आप ज़्यों नहीं कर सकते?''

ईमा ढीठ हुआ लगता है। ''कुछ गायें काटकर आप 70,000 लोगों की मौत को कालीन के नीचे छिपा नहीं सकते। अंगूठे नीचे!''

बच जाने वाले (1 इति. 22:1-27:34)[31]

कैमरा अब वाचक पर पड़ता है। ''दाऊद ने अरौना के खलिहान में होने वाली घटना को परमेश्वर के अनुग्रह की अद्‌भुत अभिव्यक्ति के रूप में और परमेश्वर के उद्देश्य के आने वाले प्रभाव अर्थात परमेश्वर से मेल करने की जगह के रूप में देखा। परमेश्वर ने राजा से बात की थी। यही वह स्थान है, जहां मंदिर बनाया जाए।''

स्क्रीन हमें अरौना के खलिहान में ले चलती है। दाऊद अपने पांव पर खड़ा होकर भावुक स्वर में कहता है, ''यहोवा परमेश्वर का घर यही है।'' वह उस जगह की ओर इशारा करता है, जहां बलिदान किया गया है। ''और इस्राएल के लिए होम की वेदी यही है'' (1 इतिहास 22:1)।

अगले दृश्य में हम दाऊद को सामग्री अर्थात ढेर सारा सोना, चांदी, लोहा और पीतल,

''गिनती से बाहर'' देवदार के पेड़ और बड़े-बड़े पत्थर एकत्र देखते हैं। वाचक की आवाज आती है, ''दाऊद की एक बड़ी निराशा यह थी कि परमेश्वर ने उसे संदूक के लिए स्थायी भवन बनाने की अनुमति नहीं दी। दाऊद के मन का स्वप्न अभी भी जल रहा था। दाऊद के जीवन के लगभग अंतिम दस वर्ष भव्य मंदिर के निर्माण की तैयारी में लगे।''

दृश्य बदलकर एक गोदाम में चला जाता है। दाऊद कीमती धातुओं के बड़े ढेर के सामने खड़ा है। उसके पास शाही वस्त्र पहने एक जवान है। दोनों के सामने कई लोग हैं। वाचक आगे कहता है: ''दाऊद ने यह स्वप्न अपने पुत्र सुलैमान और देश के अगुओं को बताया।'' दाऊद उस जवान के कंधे पर हाथ रखते हुए बोलता है:

> मेरी मनसा तो थी, कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं। परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, कि तू ने लोहू बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं, सो तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, ज्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाया है। देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शांत पुरुष होगा; ... उसका नाम तो सुलैमान [अर्थात, शांत] होगा, ... वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। ... (1 इतिहास 22:7-10)।

दृश्य बदलकर सिंहासन के कमरे में चला जाता है। दाऊद के बाल झड़ रहे हैं; उसकी दाढ़ी छोटी हो गई लगती है। दाऊद के सिंहासन के दाहिनी ओर एक दूसरा सिंहासन रखा गया है। राजा के सामने सुलैमान है। कई याजकों के साथ दूसरे लोग हैं। वाचक टिप्पणी करता है, ''बूढ़ा होने पर दाऊद ने अगले राजा के रूप में सुलैमान का अभिषेक कर दिया।''[32] एक निजी समारोह में दाऊद सुलैमान से घुटनों के बल होने को कहता है। एक याजक सुलैमान के सिर पर तेल उंडेलता है। सुलैमान अपने पिता के साथ सिंहासन पर बैठता है।

वाचक टिप्पणी करता है, ''इसके बाद सुलैमान मंदिर की योजना और तैयारी तथा मंदिर की मरम्मत और सेवा के लिए आवश्यक प्रबन्ध में भाग लेने लगा।'' दाऊद और सुलैमान को पत्थरों के गोदाम और सिंहासन के कमरे में दस्तावेजों पर विचार करते साथ-साथ दिखाया गया है।

स्टूडियो में लौटकर हम ईमा को ऊरा से कहते सुनते हैं: ''मुझे न बताओ! मुझे न बताओ! दाऊद की सराहना इसलिए की जाती है कि परमेश्वर के 'न' कहने के बावजूद उसने उसकी सेवा की बात छोड़ी नहीं। निजी तौर पर मुझे लगता है कि मंदिर आधा तो बन ही गया था।''

उज़राधिकार की क्रिया (1 राजा 1:1-53; 1 इति. 28:1-29:25)[33]

दांतों वाला आदमी स्क्रीन पर फिर वापस आता है। कमरे से बाहर निकलते हुए हम उसे कहते सुनते हैं, ''अरौना के खलिहान में कई सुंदर पत्थर अभी भी पड़े हैं। शीघ्र बनने वाले मंदिर को ध्यान में रज़कर आप अपना घर बना सकते हैं!''

हमारे लौटने पर वाचक बोल रहा होता है। वह गंभीरतापूर्वक कहता है, ''अब हम

राजा के अंतिम दिनों तक आ गए हैं। उसका स्वास्थ्य खराब होने लगा, परन्तु उसका विश्वास दृढ़ बना रहा।'' दाऊद के एक भजन के शब्द स्क्रीन पर दिखाए जाते हैं: ''मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है'' (भजन संहिता 37:25)।

हमें राजा का शयनकक्ष दिखाया जाता है। पलंग ऊंचे-ऊंचे हैं परन्तु दाऊद, उम्र के साथ ढल चुका और कमजोर पड़ गया है, कांपते हुए वह पलंग को हिला रहा है। वाचक कहता है, ''मृत्यु के निकट आने पर राजा बीमार पड़ गया और कमजोर हो गया और उसे सर्दी लग गई। सुंदर शूनेमिन अबीशग[34] को उसकी निजी सेवादार और गरम रखने के लिए राजा के जनानखाने में[35] शामिल कर दिया गया।''[36] एक सुंदर स्त्री को बिस्तर में लाया गया। जब वह राजा को भोजन खिला रही थी तो वाचक कहने लगा: ''दाऊद ने राज्य के अधिकार तो पहले ही सुलैमान को सौंप दिए थे। निसंदेह उसे लगता था कि वह अपने अंतिम दिन अबीशग के साथ आनंद में बिताएगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ।''

दृश्य बदलकर शाही ठाठबाठ में रथ में सवार एक सुंदर नौजवान की ओर आता है, जिसकी उम्र तीस से ऊपर है। रथ के साथ दर्जनों हट्टे-कट्टे नौजवान हैं। ''जब यह साफ हो गया कि दाऊद अधिक समय तक जीवित नहीं रहेगा तो उसके पुत्र अदोनिय्याह ने सिंहासन पर बैठने की कोशिश की। दाऊद ने पहले ही सुलैमान को अपनी पसंद बना लिया था,[37] परन्तु इससे अदोनिय्याह को कोई फर्क नहीं पड़ा, वह दाऊद का जीवित सबसे बड़ा बेटा[38] था और उसे लगा कि राजा उसे ही होना चाहिए।''[39]

अदोनिय्याह को दो लोगों से बात करते हुए दिखाया जाता है। एक तो वह खूंखार बूढ़ा योद्धा है, जिसे हमने पहले देखा है दूसरा एक याजक के वस्त्र पहने है। वाचक आगे कहता है: ''अदोनिय्याह ने देश के इन दो सबसे प्रसिद्ध लोगों अर्थात, सेना के कमांडर योआब और महायाजक एज्यातार की सहायता मांगी।[40] जब अदोनिय्याह को लगा कि सही समय आ गया है तो उसने किद्रोन की घाटी में एनरोगेल[41] नामक स्थान में अपने समर्थकों के लिए[42] बहुत बड़ी दावत दी।''

दृश्य बदलकर बहते झरने के पास एक हरी घाटी में चला जाता है। पृष्ठभूमि में यरूशलेम की दीवारें दिखाई दे रही हैं। भोजन से भरे लंबे मेजों के आसपास हंसते हुए लोग खा रहे हैं। अदोनिय्याह और याजक के वस्त्र पहने आदमी एक ऊंची जगह पर चले जाते हैं। अदोनिय्याह झुकता है और याजक उसके सिर पर तेल उंडेलता है। सब लोग पुकार उठते हैं, ''अदोनिय्याह राजा जीवित रहे!'' (1 राजा 1:25)।

स्क्रीन की तस्वीर महल के कमरे में ले जाती है। भद्दे से वस्त्र पहने एक आदमी चालीस के करीब एक सुंदर महिला से बात कर रहा है। वाचक की आवाज कहती है, ''जब नातान नबी ने सुना कि ज्या हो रहा है तो वह सुलैमान की माता बतशेबा के पास आया। दोनों, दाऊद के पास गए।''

हम दाऊद का शयनकक्ष देखते हैं। अबीशग बिस्तर पर पड़े राजा के लिए, एक पत्री में से पढ़ रही है। बतशेबा भागकर कमरे में आती है, दंडवत करती है, फिर उत्तेजित होकर

दाऊद को बताती है कि ज़्या हो रहा है।[43] क्रोधित होकर, दाऊद कहता है, ''सादोक याजक ... अहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ'' (1 राजाओं 1:32)। दोनों जन और आते हैं। दृढ़ स्वर से दाऊद कहता है:

> अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गीहोन को ले जाओ; और वहां सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें; तब तुम सब नरसिंगा फूंककर कहना, राजा सुलैमान जीवित रहे (1 राजा 1:33, 34)।

फिर हम सुलैमान को गलियों से होते हुए दाऊद के पहाड़ पर चढ़ते हुए देखते हैं। शाही दल द्वारा नगर में रास्ता साफ करने पर उत्सुकता पैदा हो जाती है। शीघ्र ही पूरा शहर पूर्वी फाटक की ओर उमड़ आता है।

सुलैमान नगर की दीवारों के बाहर एक ढलान की ऊंचाई पर ज़ड़ा है। वह घुटनों के बल झुकता है और एक सींग में से उसके सिर पर तेल उंडेल दिया जाता है। नरसिंगा फूंका जाता है। शोर होने लगता है, ''राजा सुलैमान जीवित रहे!'' (1 राजा 1:39)। शोर बढ़ जाता है। कोई नाच रहा है, तो कोई बजा रहा है, कुछ लोग अपने पांव थपथपा रहे हैं; सब शोर मचा रहे हैं।

वाचक स्क्रीन पर वापस आता है। ''आनंद मनाने का शोर इतना अधिक था, कि यह अदोनिय्याह की दावत वाली जगह अर्थात दक्षिण में आधा मील दूर सुनाई देता था। उसके समर्थकों का उत्साह खत्म हो गया और वे भाग गए। अदोनिय्याह, योआब और एज़्यातार ही बची-खुची भोजन सामग्री और अपने पेट में पड़ी ठंडी गांठों के साथ वहां रह गए थे।[44] अदोनिय्याह का विद्रोह जैसे शुरू हुआ था वैसे ही जल्दी से खत्म हो गया। इस्राएल को नया राजा मिल गया था। सुलैमान सिंहासन पर बैठ गया था।''[45]

जब दृश्य दोबारा बदलता है, तो दाऊद महल के छज्जेकी पर खड़ा होता है। उसके शाही वस्त्र ढीले हो गए थे। नीचे लोगों की बहुत बड़ी भीड़ है। वाचक व्याज़्या करता है: ''प्रभु से सहायता मांगकर, दाऊद बीमारी के बिस्तर से उठा और उसने लोगों को नये राजा का समर्थन करने और परमेश्वर का मन्दिर बनाने का आदेश दिया।'' दाऊद लोगों को शांत करने के लिए थोड़ा सा हाथ उठाता है। वह धीमी, परन्तु बुलन्द आवाज में बोलता है:

> हे मेरे भाइयो! और हे मेरी प्रजा के लोगो! मेरी सुनो, ... मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए हैं) उसने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है, कि वह इस्राएल के ऊपर यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे। और उसने मुझ से कहा, कि तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनों को बनाएगा, ज़्योंकि मैंने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूंगा। ... इसलिए अब इस्राएल के देखते अर्थात यहोवा की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर के साज़्हने, अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान

करते रहो; ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने वंश का सदा का भाग होने के लिए छोड़ जाओ (1 इतिहास 28:2-8)।

दाऊद का भाषण जारी रहते ही, वाचक की आवाज सुनी जा सकती है। ''दाऊद ने भी अधिकार सुलैमान को दे दिया और आधिकारिक तौर पर मन्दिर के निर्णाण का कार्य उसे सौंप दिया। दाऊद ने सुलैमान के लिए और मन्दिर बनाने के लिए लोगों के अगुओं से समर्थन मांगा और उसे मिल गया। उसने आज्ञा दी कि बलिदान किए जाएं और बहुत बड़ी दावत हो। यह इस्राएल के इतिहास में सबसे महान दिनों में से एक था, और दाऊद का अंतिम बार लोगों को दर्शन।''[46]

कैमरा हमें स्टूडियो में वापस ले आता है, जहां उदास ईमा आकाश की ओर देखता है जबकि विजयी ऊरा दोनों हाथों के अंगूठे ऊपर करता है।

बंद करना (2 शमू 23:1-7; 1 राजा 2:1-9)

हमें फिर दाऊद का शयनकक्ष दिखाया जाता है। सुलैमान अपने पिता के बिस्तर के पास झुका हुआ है। वाचक कहता है, ''लोगों को अंतिम बार दर्शन देने के बाद, दाऊद की स्थिति शीघ्र बिगड़ गई। मरने से पहले, उसने सुलैमान को अपने पास बुलाया। उसने अपने पुत्र को उन लोगों को न भूलने की आज्ञा दी, जो उसके मित्र थे (1 राजा 2:7)। उसने सुलैमान को प्रभाव वाले उन लोगों के बारे में चौकस किया, जो उसके शासन को क्षति पहुंचा सकते थे।[47] सबसे बढ़कर, दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर के प्रति वफ़ादार रहने की चुनौती दी।'' हम दाऊद को बाहर निकलते, सुलैमान पर हाथ रखते, और यह कहते देखते हैं:

> मैं लोक की रीति पर कूच करने वाला हूं, इसलिए तू हियाव बांधकर पुरुषार्थ दिखा। और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिस से जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू जाए, उसमें तू सफल होए (1 राजा 2:2, 3)।[48]

दाऊद अपनी आंखें आसमान की ओर उठाता है और धीरे-धीरे गाने लगता है।[49]

> इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है, ...
> जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा,
> वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य निकलता है,
> ऐसा भोर जिस में बादल न हों, ...
> ज़्या मेरा घराना ईश्वर की दृष्टि में ऐसा नहीं है ?
> उसने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बांधी है, ...
> (2 शमूएल 23:3-5)।

दाऊद अपनी आंखें बद कर लेता है। सुलैमान अपने पिता से लिपट जाता है। दृश्य धीरे-धीरे ओझल होता है, और वाचक कहता है, ''इसके थोड़ी देर बार, दाऊद चुपके से इस जीवन से कूच कर गया। राजा दाऊद का चालीस वर्ष का शासन समाप्त हो गया। इस पृथ्वी पर उसके सत्तर वर्ष पूरे हो गए। इस्राएल का मधुर भजन गायक मर गया था।''

आंसू पोंछते हुए, स्टूडियो में पहुंचकर हमें झटका लगता है। उत्तेजित ईमा अपनी मुट्ठी हिला रहा है। ''निर्दोष ठहराने की बात करो! मुझे पता चला है कि दाऊद ने सुलैमान को योआब और शिमी से *पीछा छुड़ाने* के लिए कहा!''

ऊरा विरोध करता है। ''ठीक है, आखिर योआब भी तो अदोनिय्याह के षड्यन्त्र में साथ था।''

''होगा, परन्तु *शिमी* कहां था! दाऊद ने शिमी से प्रतिज्ञा की थी कि वह उसे *नहीं* मारेगा।''

''हो-गा, ... शिमी शायद दूसरा अवसर मिलने के बाद भी दाऊद के शासन को हानि पहुंचाता रहा।''[50]

ईमा फुफकारता है। ''आज आप 'शायद, शायद' बड़ा कर रहे हैं! *तथ्यों* के आधार पर, अस्वीकृति में यह अंगूठा *नीचे* जाता है।''

ऊरा तालिका पर देखता है। ''ठीक है, परन्तु जब आप जोड़ करोगे, तो नीचे किए अंगूठों के बजाय ऊपर किए अंगूठे ज्यादा होंगे।''

ईमा गुर्राता है, '' *जोड़* की किसे परवाह है ? यही वह आदमी है जिसके कारण सुर्खियां बनी थीं, जो लगता था कि इतना महान होगा! उसने अपनी ही कब्र खोदने के लिए अपने निकट इतने कंकाल क्यों रखे थे!''

ऊरा जवाब देता है: ''क्योंकि वह सिद्ध नहीं था! क्या आप दावे से कहते हैं कि आप सिद्ध हैं ?''

ईमा मुंह तोड़ जवाब देता है: ''हां, दाऊद जितना तो हूं ही। वास्तव में, ...''

हम कभी नहीं जान पाएंगे कि ईमा क्या कहना चाहता था, क्योंकि अचानक तेज़ रोशनी से स्टूडियो जगमगा उठता है और एक आवाज़ कहती है: ''ईमा और ऊरा, चुप चाप बैठ जाओ। तुम दोनों में से कोई भी सही नहीं है। तुम में से एक तो दाऊद का पक्ष लेने को तैयार रहता है; जबकि दूसरा उसकी निंदा करने को। तुम में से कोई भी वैसे नहीं देखता जैसे *मैं* देखता हूं, क्योंकि मैं सबसे ऊपर *मन* को देखता हूं। दाऊद मेरे मन के अनुसार पुरुष था!'' समीक्षक ईमा और ऊरा की अंतिम झलक में, हम देखते हैं कि घूरते हुए, उनके मुंह खुले हैं और वे ऐसे तनकर खड़े हैं, जैसे पत्थर बन गए हैं। फिर टीवी फट कर नष्ट हो जाता है।

दाऊद पर परमेश्वर का अंतिम शब्द

शायद मैंने अपने आप को इस अंतिम दृश्य में कुछ अधिक ही लिप्त कर लिया, परन्तु मैं एक बात पर पहुंचना चाहता था कि दाऊद पर अंतिम शब्द कहने का अधिकार हमें नहीं बल्कि परमेश्वर को है। इस शृंखला के अंत में आकर आइए यह समीक्षा करने के लिए

कुछ पल देते हैं कि *परमेश्वर* दाऊद के जीवन का मूल्यांकन किस प्रकार करता है।

आइए शमूएल के कथन से आरज़्भ करते हैं, जब परमेश्वर ने शाऊल को राजा के रूप में ठुकराया था: ''परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिए *एक ऐसे पुरुष को* ढूंढ़ लिया है *जो उसके मन के अनुसार है*; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है'' (1 शमूएल 13:14)।

जब शमूएल अगले राजा का अभिषेक करने के लिए बैतलहम में यिशै के घर पहली बार गया था, तो इस बूढ़े न्यायी को लगा था कि यिशै के बड़े लड़कों में से एक लज़्बा सुन्दर लड़का ही अगला राजा होगा; परन्तु परमेश्वर ने कहा, ''न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसकी डील की ऊंचाई पर, ज़्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; ज़्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, *परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है* '' (1 शमूएल 16:7)।

इस शृंखला में, हम दाऊद के अच्छे दिनों में उसके साथ भागे हैं और उसके बुरे दिनों में उसके साथ रेंगे हैं। ऐसा करते हुए, मैं मानता हूं कि मैं परमेश्वर की नालिश का दोषी हूं ज़्योंकि ''मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है।'' कहा जाता है कि हम में से बहुत से लोग दया करने वाले होने के बजाय न्याय की गद्दी पर बैठना अधिक पसन्द करते हैं, और यह सच है। दाऊद के जीवन का अध्ययन करते हुए दो बातों को भूल जाना आसान है: (1) यदि हम दाऊद का न्याय करते भी हैं, तो यह नये नियम के मापदण्डों के अनुसार नहीं बल्कि उस समय को ध्यान में रखकर होना चाहिए, जिसमें वह रहता था। (2) दाऊद के जीवन के सभी उतार चढ़ावों में, परमेश्वर का ध्यान दाऊद के *मन* पर था। पहली पुस्तक के पहले पाठ में ध्यान दिलाई गई कई बातों को मैं आपको फिर याद दिलाना चाहता हूं:

> दाऊद के जीवन से सज़्बन्धित सभी अध्याय *इतिहास* पर उतना नहीं जितना उसके *मन* पर ध्यान दिलाते हैं।
>
> ... दाऊद किसी अजायब घर में रखा हुआ संगमरमर का संत नहीं था। उसकी नसों में गर्म खून दौड़ता था और उसके शरीर में गहरी भावनाएं थीं। दाऊद हम में से अधिकतर लोगों में से अधिक ऊपर उड़ा होगा, वह टूटा भी बड़ी बुरी तरह था।
>
> ... दाऊद खुशहाली में हो या तंगी में, उसकी निष्ठा परमेश्वर में कभी कम नहीं हुई। यद्यपि जीवन के तूफ़ानों से आत्मिक कज़्पास कभी-कभी डोल जाता था, परन्तु तूफ़ान के थम जाने पर दाऊद का कज़्पास फिर से अपने आत्मिक ध्रुव अर्थात परमेश्वर की ओर आ जाता था।[51]

अब मेरे साथ दाऊद की मृत्यु के बाद समय से थोड़े आगे चलें। 1 राजा 3 अध्याय में परमेश्वर सुलैमान को स्वप्न में मिला, और उसे कुछ भी मांगने को कहने लगा। आयत 14 पर ध्यान दें: ''फिर यदि तू *अपने पिता दाऊद की नाईं* मेरे मार्गों में चलता हुआ, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा तो मैं तेरी आयु को बढ़ाऊंगा'' (1 राजा 3:14)।

1 राजा 9 में हमें ऐसा ही वाज़्य मिलता है। परमेश्वर दूसरी बार सुलैमान पर प्रकट होकर कहता है:

> और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाई मन की खराई और सिधाई से अपने को मेरे साज़्हने जानकर चलता रहे, और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे तो मैं तेरा राज्य इस्राएल के ऊपर सदा के लिए स्थिर करूंगा। ... (1 राजा 9:4, 5)।

इन दो पदों को पढ़कर हम अचज़्भित होकर बैठ जाते हैं। दाऊद परमेश्वर के मार्गों पर चलता था, परमेश्वर की *सब* आज्ञाओं को मानता था? ''हे परमेश्वर, ज़रा रुकना, आप भूल गए हैं कि दाऊद ने बतशेबा के मामले में दस आज्ञाओं का 40 प्रतिशत तोड़ा था? ज़्या आप भूल गए हैं कि आप उस पर इतना क्रोधित हुए थे और इस्राएल के सज़र हज़ार पुरुष मारे गए थे?'' मैं प्रभु को मुस्कराते और यह कहते देखने की कल्पना करता हूं, ''हां, मैं भूल गया हूं। जो पाप मैं क्षमा करता हूं, उन्हें भूल जाता हूं।[52] ज़्या *तू* मेरे दास दाऊद की कलम से लिखी यह आयतें भूल गया है?''

> यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी,
> विलज़्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है।
> ... जैसा आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है,
> वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।
> उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है,
> *उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।*
> जैसा पिता अपने बालकों पर दया करता है,
> वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।
> ज़्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है;
> और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है
> (भजन संहिता 103:8-14)।

दाऊद ने परमेश्वर को गंभीरता से लिया। उसका मन परमेश्वर के मन से मिल गया था। परमेश्वर उससे प्रेम करता था और परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया था। इस कारण, परमेश्वर कह सकता था, ''दाऊद मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन करते हुए, मेरे मार्गों में चला। वह मन की निष्ठा और सिधाई से मेरी सब आज्ञाओं को मानते हुए चलता था। उसने मेरी विधियों और मेरी आज्ञाओं का पालन किया!''

आइए नये नियम के कुछ पदों में संक्षेप में जाते हैं। प्रेरितों के काम 7 अध्याय में, महासभा के सामने महान प्रवचन में, स्तिफनुस ने पुराने नियम के इतिहास की एक समीक्षा प्रस्तुत की। दाऊद पर आकर वह कहने लगा, ''दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया'' (आयत 46)। अपनी कब्र के पत्थर पर ''दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया'' लिखाने में

मुझे कोई आपज़ि नहीं होगी।

परन्तु जिन आयतों की ओर मैं विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूं, वे पिसिदिया के अन्ताकिया की महासभा में पौलुस के प्रवचन में मिलती हैं: ''फिर उसे [राजा के रूप में शाऊल को] अलग करके [परमेश्वर ने] दाऊद को उनका राजा बनाया; जिस के विषय में उसने गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा'' (प्रेरितों 13:22)। एज़्पलिफ़ाइड बाइबल में इस आयत के अंतिम भाग को बढ़ाया गया है, ''मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा *और मेरे कार्यक्रम को आगे बढ़ाएगा*।'' बाद में पौलुस के प्रवचन (सरमन) में कहा गया, ''दाऊद तो *परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया; और अपने बाप-दादों में जा मिला; और सड़ भी गया*'' (प्रेरितों 13:36)। जीवन के अंतिम पड़ाव में आकर, यदि यह कहा जाए कि हमने अपनी पीड़ी में परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया है तो कितना अद्‌भुत नहीं होगा?

राजा के रूप में दाऊद के लिए परमेश्वर की इच्छा ज़्या *थी*? दाऊद के शासन के लिए उसका ज़्या कार्यक्रम था? दाऊद की उपलज़्धियों को ''परमेश्वर के अधीन एक देश'': ''एक देश'' वाज़्यांश से संक्षिप्त की जा सकती हैं ज़्योंकि दाऊद ने बारह घमण्डी तथा स्वतन्त्र गोत्रों को शांति से रहने वाले एक देश में बदल दिया था। ''परमेश्वर के अधीन''- दाऊद हमेशा ज़ोर देता था कि इस्राएल का वास्तविक राजा वह नहीं बल्कि यहोवा है। दाऊद अपने परमेश्वर के प्रतिद्वद्वियों को अनुमति नहीं देगा। दाऊद के सिंहासन पर बैठने से पहले मूर्तिपूजा एक समस्या थी; दाऊद के मरने के बाद भी मूर्तिपूजा एक समस्या ही थी। दाऊद के राजा होने के समय यह कोई समस्या नहीं थी। दाऊद मूर्तिपूजा को सहन नहीं करता था![53] दाऊद के शासन में इस्राएल आत्मिक शिखर पर था।

तो फिर दाऊद पर परमेश्वर का अंतिम शज़्द ज़्या है? प्रेरितों 13:22 के शज़्दों को फिर सुनें। दाऊद की मृत्यु के एक हज़ार वर्ष पश्चात भी परमेश्वर ने कहा, ''मुझे ... दाऊद, *मेरे मन के अनुसार* मिल गया है।'' तथ्यों की समीक्षा करने, प्रमाणों की छानबीन और मूल्यांकन करने के बाद, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि परमेश्वर हमें यह कहकर शांत कर देता है कि, ''दाऊद मेरे मन के अनुसार पुरुष था, और यही सबसे बड़ी बात है!''

न तो मैं सिद्ध हूं, और न आप। मैं अपनी अपेक्षाओं पर भी, जो परमेश्वर की शर्तों से बहुत कम हैं, खरा नहीं उतर सकता। परन्तु एक बात जो मैं कर सकता हूं वह यह है कि मैं दाऊद की तरह अपने मन में परमेश्वर को प्रथम स्थान देने की कोशिश कर सकता हूं। अपने प्रभु के मन के साथ अपना मन मिलाने के प्रयास में मेरा पूरा जीवन बीत सकता है। मेरे जीवन के लिए मनुष्यों के मूल्यांकन आपस में मेल खाते हो सकते हैं और नहीं भी; वह सही हो सकते हैं और नहीं भी। परन्तु अंत में केवल एक ही मूल्यांकन काम आएगा। यदि परमेश्वर कहे, ''डेविड, अर्थात डेविड रोपर-मेरे मन के अनुसार एक पुरुष था,'' बस इतना ही काफी है।

प्रवचन नोट्स

इस पाठ में दाऊद के अंतिम दिन टैलिविज़न कार्यक्रम के रूप में रखे गए हैं। यदि इससे आपको लाभ नहीं होता या जहां आप रहते हैं वहां यह प्रासंगिक नहीं है, तो आपको मंच पर किसी नाटक का ढांचा बनाने का, या बैंचों पर गुदगुदाते हुए समीक्षकों वाली मैमोरियल सर्विस करके प्रयास करना चाहिए।

बहुत-सी मंडलियों में बुज़ुर्गों की संज़्या बढ़ रही है, परन्तु उनकी विशेष आवश्यकताओं का ध्यान रखकर बहुत कम पाठ मिलते हैं। बूढ़े हो रहे लोगों को दो समस्याओं का सामना करना पड़ता है: (1) व्यवसाय हो या कलीसिया, दोनों में वह काम नहीं कर पाने पर जो कभी हमने किया था, पहचान खोना और (2) यह अहसास कि हमारे सभी स्वप्न पूरे नहीं होंगे, कि हम जो कुछ कर सकते थे वह हमने कर लिया है। अंतिम दिनों में दाऊद के सामने ये दोनों समस्याएं थीं: (1) उसमें पहले जितनी सामर्थ और कौशल नहीं था, और (2) परमेश्वर ने मन्दिर बनाने के उसके स्वप्न को ''न'' कह दिया। मन्दिर निर्माण की तैयारी करते हुए अपने जीवन की प्राथमिकता को बदलने से दाऊद को दो चुनौतियां मिलीं। बूढ़ा होने के साथ एक बुद्धिमान व्यज़्ति दूसरे ढंग से मसीह के कार्य के लिए एक सज़्पज़ि बन सकता है। मुझे यह कथन अच्छा लगता है: ''दाऊद पीछे की ओर देखकर नहीं, आगे को देखकर मरा।''

दाऊद के जीवन को संक्षेप में बताने का एक और ढंग ''वह गाता हुआ गया'' पर अंतिम पाठ और दाऊद के रूप में ''इस्राएल का मधुर भजन गाने वाला'' (2 शमूएल 23:1) पर ज़ोर देना है। इस प्रस्तुति का एक भाग, भजनों का आज भी हमारे जीवनों में प्रभव हो सकता है: (1) नये नियम की शिक्षा में उनका इस्तेमाल (नये नियम में पुराने नियम की अन्य किसी भी पुस्तक से अधिक भजनों की पुस्तक को उद्धृत किया गया है), (2) उन गीतों में जो हम गाते हैं और (3) और आज भी हमारे मनों से बात करने के दाऊद के भजनों के ढंग में।

टिप्पणियां

[1]डज़्ल्यू.फिलिप कैलर, *डेविड, द शैफर्ड किंग* (वैको, टेज़्सस: वर्ड पज़्लिशर्स, 1986), 182. [2]दूसरा शमूएल 21:1 की टिप्पणी में कहा गया है, ''दाऊद ने यहोवा का दर्शन ढूंढ़ा।'' [3]बुज़ुर्गों ने इस सब में परमेश्वर का हाथ माना। पुराना और नया दोनों नियम सिखाते हैं कि परमेश्वर प्राय: प्राकृतिक विपज़ियों केद्वारा हमारा ध्यान खींचता है। हाल ही में हुई किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा को ध्यान में रज़कर यह पूछना उचित होगा कि ''ज़्या परमेश्वर कुछ समझाने का प्रयास कर रहा है?'' [4]1 शमूएल में इस घटना का विवरण नहीं है और इसके समय तथा कारण केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। 2 शमूएल 21:2 कहता है कि ''कि शाऊल को जो इस्राएलियों तथा यहूदियों के लिए जलन हुई थी, इससे उसने उन्हें मार डालने केलिए यत्न किया था।'' शाऊल को जानने के कारण, उसके उद्देश्य राजनैतिक ही होंगे। हम इसे ''इस्राएल और यहूदा के लोगों के [स्वीकृति के] लिए अपनी जलन के कारण'' कहेंगे। [5]कोई मानेगा कि महायाजकों ने इस चयन में सहायता की। [6]यह

घटना संभवतया योनातन के साथ की गई प्रतिज्ञा के बाद घटी (2 शमूएल 9)। [7]इन सात लोगों को मारने से योनातन के वंश को छोड़ शाऊल के सभी नर वशंज खत्म हो गए होंगे (इतिहास की पुस्तक में केवल योनातन के वंश का ही नाम है)। शाऊल के घराने को परमेवश्र द्वारा ठुकरा दिया गया था। [8]ईशबोशेत ने अज्रेर पर रिस्पा के साथ अवैध सज्बन्ध होने का आरोप लगाया (2 शमूएल 3)। [9]मेरब की शादी पहले दाऊद से करने की प्रतिज्ञा की गई थी, फिर उसे अद्रीएल को ज्याह दिया गया। कुछ हस्तलेखों में मीकल है (देखें KJV), परन्तु मीकल के तो मरने के दिन तक कोई संतान नहीं हुई थी (2 शमूएल 6:23), इसलिए सर्वसज्मति यह है कि ये मीकल की बहन, मेरब के बेटे थे। कुछ लोगों का सुझाव है कि मीकल ने मेरब के बच्चों का पालन-पोषण अपने बच्चों की तरह किया था। [10]यदि रिस्पा वहां जौ की कटनी के समय (अर्थात मार्च से मई तक) से वर्षा ऋतु के सामान्य समय (अर्थात नवंबर से दिसंबर) तक रही, तो वह वहां छह से आठ महीने तक रही!

[11]अब तक शाऊल और योनातन की हड्डियां ''याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे'' थीं, जहां गिलादी याबेश के लोगों ने उन्हें दफनाया था (1 शमूएल 31:13)। [12]बहुत से प्रारज़िभक रूढ़िवादी लेखकों का मत था कि दाऊद का निर्णय सही था। वे ''देश पर शाप'' और ''खून के बदले खून'' की बात करते हैं। बाद के टीकाकार इतने आश्वस्त नहीं है। [13]इन आयतों पर ''हे परमेश्वर, हमें अगुवे दे'' पाठ में संक्षेप में चर्चा की गई है। [14]यहीं पर दाऊद के आदमियों ने उसे युद्ध में न जाने के लिए कहा था। [15]2 शमूएल 22 मूलत: भजन संहिता 18 की तरह ही है। [16]2 शमूएल 21; 22 में दाऊद ने अपने भज्तिपूर्ण जीवन पर जोर दिया। [17]इस पद की सामग्री इस पुस्तक में, विशेषकर ''हे परमेश्वर, हमें अगुवे दे'' पाठ में इस्तेमाल की गई है। [18]1 इतिहास 11:11 में ''तीन सौ'' बार है। [19]असाहेल को अज्रेर ने मारा था (2 शमूएल 2)। [20]1 इतिहास में यह सूची अध्याय 11 में मिलती है। ऊरिय्याह के बाद कई दूसरों का नाम है। स्पष्टत:, मरने वाले उन ''तीस'' की तरह उनकी जगह अपने आप को साबित करने वाले योद्धाओं ने ले ली। इस प्रकार, ''दाऊद की सेना के प्रसिद्ध लोगों'' की संज्या कई साल तक बढ़ती रही।

[21]अतिरिज्त जानकारी के लिए ''बड़े बच्चों के लिए एक कहानी'' में देखें। [22]दाऊद ने योआब को गिनती करने की आज्ञा दी थी। [23]1 इतिहास 21:5 में संज्या अलग दी गई है। परन्तु 1 इतिहास 21:6 और 27:23, 24 में टिप्पणी है कि यह गिनती अधूरी थी। शायद यह कभी स्पष्ट नहीं हो पाया कि सही गिनती ज्या थी। [24]हमें यह नहीं बताया गया कि दाऊद इस निष्कर्ष पर ज्यों पहुंचा कि उसने पाप किया था, शायद सच्चाई का इनकार करने पर योआब की बातें उसके मन में बार-बार आती थीं। 1 इतिहास 21:7 से संकेत मिल सकता है कि किसी प्राकृतिक आपदा से दाऊद को विश्वास हो गया कि परमेश्वर उससे अप्रसन्न था। [25]2 शमूएल 24:13 में ''सात वर्ष का अकाल'' है। 1 इतिहास के सात सप्तति अनुवाद में ''तीन वर्ष'' है, जो अधिक तर्कसंगत लगता है: तीन वर्ष, तीन महीने या तीन दिन (RSV, NIV, तथा अन्य अनुवादों में 2 शमूएल 24:13 देखें)। [26]1 इतिहास 21:18से में अरौना को ओर्नान कहा गया है। बाइबल काल में बहुत से लोगों के एक से अधिक नाम होते थे। [27]1 इतिहास 21:28-30 एक कारण देता है कि नगर के निकट एक जगह परमेश्वर द्वारा चिह्नित की गई थी: समय कम था और दाऊद के पास गिबोन में जाने का समय नहीं था, जहां होम बलि की वेदी थी। परन्तु दाऊद ने गूढ़ महत्व देखा और मंदिर के स्थान के लिए उसी जगह को चुन लिया (1 इतिहास 22:1; 2 इतिहास 3:1)। [28]2 शमूएल 24:24 कहता है, ''दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास शेकेल में खरीद लिया।'' 1 इतिहास 21:25 कहता है, ''दाऊद ने उस स्थान के लिए ओर्नान को 600 शेकेल सोना तौल कर दिया।'' दो सौदे किए गए होंगे, पहला सौदा केवल खलिहान के लिए और दूसरा सौदा पूरी जगह का जिस पर मन्दिर बनाया जाना था। [29]1 इतिहास 21:26 कहता है, ''यहोवा ... ने होम बलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिरा कर उसकी सुन ली।'' यह मान लिया जाता है कि कर्ज़मेल पर्वत पर भी स्वर्ग से ऐसी ही आग आई थी (1 राजा 18:38)। [30]दो और सज़्भावनाएं हैं: शायद दाऊद आंकड़ों का इस्तेमाल आस पास के देशों पर दबाव बनाने के लिए करना चाहता था, या शायद वह पता लगाना चाहता था कि यदि इस्राएल के साथ शज़्ति प्रदर्शन के लिए युद्ध करने की आवश्यकता पड़ जाए तो यहूदा में पर्याप्त योद्धा मिल सकेंगे।

[31]मन्दिर के लिए दाऊद की तैयारी पर ''पवित्र भूमि पर खड़े होना'' पाठ में चर्चा की गई थी। दाऊद के राज्य को संगठित करने पर ''हे परमेश्वर, हमें अगुवे दे'' पाठ में की गई थी। [32]1 इतिहास 23:1. हमें 1 राजा

1; 2; 1 इतिहास 23–29 के सही सही कालक्रम तथा महत्व का पता नहीं है। इस पाठ का रूपांतरण एक सज़्भावना मात्र है।[33]प्रभु ने चाहा तो इन आयतों का सुलैमान तथा 1 व 2 इतिहास की भावी पुस्तकों में गहराई से चर्चा की जाएगी।[34]शूनेम, इस्साकार के कबायली इलाके में यिज़्रेल के मैदान के निकट था।[35]ज़्योंकि यह कभी नहीं कहा गया कि अबीशग दाऊद की पत्नी थी, कुछ लोग उसके उससे ज़्याह की बात से इनकार करते हैं। मेरा मानना है कि वह कम से उसकी रखेल तो अवश्य थी। नैतिक तौर पर मैं यह मानता हूं ज़्योंकि इसके बिना मुझे नहीं लगता कि दाऊद ने इस प्रबन्ध को स्वीकार किया होगा (उसके मन में अभी भी स्पष्ट था, जैसा कि अगली घटना से पता चलता है)। शास्त्र के हिसाब से मैं इसे इसलिए मानता हूं ज़्योंकि यदि अबीशग दाऊद के ज़नानखाने का भाग न होती तो अबीशग के लिए अदोनिय्याह की बिनती से सुलैमान इतना परेशान न होता (1 राजा 2:22से)।[36]जोसेफस कहता है कि इस प्रबन्ध का उद्देश्य शरीर को गरम रखना था (सभोपदेशक 4:11)। परन्तु दाऊद की और भी कई पत्नियां तथा रखेलें थीं जो बिस्तर गर्म करने का काम कर सकती थीं। राज्य की सबसे सुन्दर लड़की ढूंढ़ने पर ज़ोर देने केकारण कुछ लोग यह सोचते हैं कि राजा के रूप में काम करने के लिए यह क्षमता परखने का ढंग था:आदमी का पौरुषिक बल उसकी सामर्थ के रूप में माना जाता था। इनका मानना है कि अबीशग को यह जानने के लिए चुना गया था कि उसकी सुन्दरता राजा को उज़ेजित करती भी है या नहीं। परन्तु यह केवल अनुमान है कि दाऊद अबीशग के साथ सहवास कर नहीं पाया या उसने करना नहीं चाहा।[37]यह तथ्य कि अदोनिय्याह ने अपने भाई सुलैमान को *छोड़* और सब को निमन्त्रण दिया (1 राजा 1:9, 10, 19) संकेत देता है कि उसे मालूम था कि अगले राजा के रूप में सुलैमान का अभिषेक किया जा चुका है।[38]अदोनिय्याह चौथा सबसे बड़ा बेटा था (2 शमूएल 3:4)। हम सबसे बड़े और तीसरे नज़्बर वाले बेटों, अर्थात अज़्नोन और अज़शालोम की मृत्यु देख चुके हैं। सामान्यतया माना जाता है कि दूसरा सबसे बड़ा, किलाब/दानिय्येल छोटी उम्र मे ही मर गया था।[39]1 राजा 1:6 से हमें पता चलता है कि अदोनियाह को लगता था कि अगला सबसे बड़ा जीवित पुत्र होने के कारण राजा उसे ही बनना *चाहिए,* कि उसे लगता था कि वह राजा बन *सकता* है ज़्योंकि वह राजा की तरह दिखता था (वह बहुत सुन्दर था), और यह कि उसे लगता था कि राजा वही *होगा* ज़्योंकि उसकी इच्छा हमेशा पूरी की जाती थी। (''उसके पिता ने उसे कभी टोका नहीं था'')।[40]हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि इन्होंने अदोनिय्याह के साथ मिलकर षड्यन्त्र ज़्यों किया। उन्होंने स्पष्टतया सोचा होगा कि वे अदोनिय्याह को राजा बनाकर ऐश करेंगे। शायद योआब बनायाह द्वारा उसका पद ले लेने से डरता था (1 राजा 2:3)। शायद एज़्यातार सादोक से ईर्ष्या करता था।

[41]अदोनिय्याह ने अबशालोम का लिखा ही पढ़ा। जिन लोगों को निमन्त्रण *नहीं* दिया गया था उनके नाम 1 राजा 1:8, 10 में हैं। हम नहीं जानते कि ''शिमी'' और ''रेई'' कौन थे (यह वह शिमी *नहीं* था जिसने दाऊद को कोसा था)।[42]''एन-रोगेल'' का अर्थ है ''रोगेल का चश्मा।''[43]हमारे पास यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि नातान और बतशेबा ने दाऊद की शपथ दिलाई (1 राजा 1:13, 17), यद्यपि इसका पहले उल्लेख नहीं था। दाऊद अज़्सर संकेत देता था कि उसके बाद सुलैमान राजा होगा; और दाऊद जिसके मन में यह स्पष्ट था चाहे उसका शरीर जवाब दे चुका था, ने माना कि उसने ऐसी शपथ ली थी (1 राजा 1:30)।[44]तीन तीनों षड्यन्त्रकारियों का अंत 1 राजा 2 में मिलता है।[45]सुलैमान ने दाऊद के अंतिम दिनों में सहायक रिजेन्ट के रूप में काम किया था (1 राजा 1:46, 48)।[46]लोगों को इस अंतिम दर्शन के विर्वण के लिए 1 इतिहास 28; 29 देखें।[47]हमारे दृष्टिकोण से, बदला लेने की दाऊद की स्पष्ट इच्छा के कारण वह सुलैमान को अंतिम शज़्द न कह पाया। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि वे बड़े कठोर तथा कड़े दिन थे। मैंने दाऊद की जगह अपने आप को रखने का प्रयास किया। मेरे शज़्द दाऊद के शज़्दों के जैसे नहीं हो सकते, परन्तु मेरे विचार से मैं परेशान करने वाले लोगों से अपने बेटे को चौकस करूंगा।[48]कई बार दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर का वफ़ादार रहने का आग्रह करते हुए, विशेष आज्ञाएं दीं, जो (जहां तक बाइबल बताती है) उसने अपने दूसरे पुत्रों में से किसी को नहीं दीं। दाऊद एक आदर्श पिता नहीं था, परन्तु कम से कम उसने अपने एक पुत्र के साथ आदर्श बनने का प्रयास किया। अच्छा पिता बनने का प्रयास कभी भी किया जा सकता है।[49]2 शमूएल 23:1–7 के शज़्द ''दाऊद के अंतिम वचन'' माने जाते हैं।[50]शिमी के बारे में दाऊद की आज्ञा इस पद में समझने वाली सबसे कठिन बात है, दाऊद ने शपथ खाई थी कि शिमी जीवित रहेगा (2 शमूएल 19:23)। प्रारज़्भिक रूढ़िवादी टीकाओं में परमेश्वर

के अभिषिक्त की बुराई करने के परिणामों की ओर ध्यान दिलाते हुए दाऊद का पक्ष लिया जाता था। आधुनिक विद्वान इस बात पर एकमत नहीं हैं कि दाऊद ने जो सुलैमान से कहा वह सही था या नहीं। कुछ लोग यह ध्यान देते हैं कि शिमी एक प्रभावशाली आदमी था (जैसा कि इस तथ्य से सिद्ध होता है कि वह दाऊद के लौटने पर अपने साथ एक हज़ार और बिन्यामीनियों को लाया था) और सुलैमान के लिए निरन्तर खतरा था। दूसरे लोग इसे दाऊद की मानवीयता के एक और उदाहरण के रूप में लेते हैं जो कि मरने से पहले उसकी अंतिम गलती है। क्षमा पर अंतिम वचन दाऊद नहीं, यीशु है।

[51]''इस्राएल के इतिहास के प्रसिद्ध लोग, भाग 1'' के ''परिचय'' पाठ में पृष्ठ 84 पर देखें। [52]यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12. परमेश्वर इस अर्थ में पापों को ''भूलता है'' कि जब हम उनसे मन फिराते हैं, तो वह फिर कभी उन्हें हमारे विरुद्ध नहीं लाता। वे ऐसे हो जाते हैं *जैसे* हुए ही न हों। निश्चय ही, सर्वज्ञ परमेश्वर होने के कारण प्रभु को सब कुछ याद रहता है। [53]1 राजा 9:6-9 देखें, जो 1 राजा 9:4, 5 में दाऊद के बारे में परमेश्वर के कथन बाद आता है।